✺ 16 मई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

✺ ज्ञान-

1] विष्णु अवतरण का एक खेल दिखलाते हैं। विमान पर बैठकर फिर नीचे आते हैं। अभी तुम बच्चे समझते हो अवतार आदि जो कुछ दिखलाते हैं वह सब रांग हैं। अभी तुम समझते हो– हम आत्मायें असुल में कहाँ के रहने वाले हैं, कैसे ऊपर से फिर यहाँ आते हैं, कैसे 84 जन्मों का पार्ट बजाते पतित बनते हैं? अभी फिर बाप पवित्र बनाते हैं।

2] तुम्हारे पास अभी कितना ज्ञान है। खुशी होनी चाहिए ना। कैसे हमने 84 का चक्र लगाया है। कहाँ 84 जन्म, कहाँ 84 लाख ! इतनी छोटी-सी बात भी किसके ध्यान में नहीं आती है। लाखों वर्ष की भेंट में तो याह एक-दो रोज़ के बराबर हो जाता है।

3] बाप कहते हैं मैं सतयुग-त्रेता में तो नहीं आता हूँ परन्तु नॉलेज सारी सुनाता हूँ। वन्डर लगता है ना। जिसने कभी पार्ट ही नहीं लिया, वह कैसे बतलाते हैं ! बाप कहते हैं मैं कुछ भी देखता नहीं हूँ। न मैं सतयुग-त्रेता में आता हूँ परन्तु मेरे में नॉलेज कितनी अच्छी है जो मैं एक ही बार आकर तुमको सुनाता हूँ। तुमने पार्ट बजाया, तुम जानते नहीं हो और जिसने पार्ट ही नहीं बजाया है वह सब सुनाते हैं– वन्डर है ना।

✺ योग-

1] बाबा में यह नॉलेज कहाँ से आई? उनका तो कोई गुरू भी नहीं। ड्रामानुसार पहले से सही उनमें पार्ट बजाने की नूँध है। इसको कुदरत कहेंगे ना। हर एक बात वन्डरफुल है। तो बाप बैठ नई-नई बातें समझाते हैं। ऐसे बाप को कितना याद करना चाहिए। 84 के चक्र को भी याद करना है।

✺ धारणा-

1] अब देखते हैं, सुनते हैं तो कहते भी हैं यह ज्ञान तो यथार्थ रीति है। परन्तु काम महाशत्रु है, इस पर जीत पानी है, तो यह सुनकर ढीले पड़ जाते हैं। तुम कितना समझाते हो, समझते ही नहीं। कितनी मेहनत लगती है। यह भी जानते हैं कल्प पहले जिन्होंने समझा था वही समझेंगे। दैवी परिवार वाले जितने बनने वाले होंगे उन्हों को ही धारणा होगी।

2] वन्डर खाते हैं, फिर पक्के होकर आते हैं। दिल होता है ऐसा बाप वर्सा देने आये हैं, उनसे मिलें। इस पहचान से आकर मिलें तो बाप से ज्ञान रत्न धारण कर सकें। श्रीमत को पालन कर सकें।

✺ सेवा-

1] विश्व की सभी आत्मायें अन्जान और दु:खी हैं, आप उन पर उपकार करो, बाप का परिचय देकर खुशी में लाओ, उनकी आंखे खोलो।

2] हम सो ब्राह्मण फिर देवता बनेंगे फिर हम उतरते-उतरते नीचे आते हैं। कितना पुनर्जन्म लेत चक्र लगाते हैं। यह नॉलेज बुद्धि में रहने कारण खुशी भी रहनी चाहिए। औरों को भी यह नॉलेज कैसे मिले? कितने ख्यालात चलते रहते हैं। कैसे सबको बाप का परिचय दें? तुम ब्राह्मण कितना उपकार करते हो। बाप भी उपकार करते हैं ना।

3] अन्दर में यह आना चाहिए– कैसे औरों को भी रावण से छुड़ायें। सर्विस हो सकती हैं तो प्रबन्ध करना है। सच्चे दिल से, नि:स्वार्थ भाव से सेवा करनी है। बाबा कहते हैं ऐसे बच्चों की हुण्डी मैं सकारता (भरता) हूँ। ड्रामा में नूँध है। सर्विस का अच्छा चान्स है तो इसमें पूछने का भी नहीं रहता। बाप ने कह दिया है सर्विस करते रहो।